सत्संग भजनावली

प्रकाशक :-

आर्य वानप्रस्थ आश्रम

ज्वालापुर जिला (हरिद्वार)

सं० २०४८ वि०] [मूल्य २-५० रु०

आर्य समाज के नियम तथा उद्देश्य

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२ ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मैं सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिये।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

* ओ३म् *

सत्संग भजनावली

(प्रभु भक्ति, सत्सङ्ग महिमा, देश प्रेम तथा ऋषि महिमा के गीतों का संग्रह)

संग्रहकर्ता :-

बृज बिहारी वानप्रस्थ

प्रकाशक :-

आर्य वानप्रस्थ आश्रम

ज्वालापुर (हरिद्वार)

१००० प्रतियाँ　　दयानन्दाब्द १५४　　मूल्य

विक्रम २०४८

॥ ओ३म् ॥

तीर्थ का सच्चा स्वरूप

कवयिता—पं० धर्मदेवजी विद्या मार्तण्ड (दव मुनि वानप्रस्थ)
ज्वालापुर

तीर्थ रूप को जानो मित्रों, तीर्थ रूप को जानो,
शास्त्र विहित जो तीर्थ रूप है, उसको ही पहिचानो।
तीर्थ वो हैं जग से तराते, भवसागर से पार कराते,
गंगादिक तो नहीं तराते, तीर्थ न इनको मानो।
ज्ञान तीर्थ है, सत्य लोक है, ब्रह्मचर्य अति उत्तम तीर्थ,
प्राणी दया है, तीर्थ सरलता, तीर्थ इन्हीं को मानो।
तीर्थ अहिंसा, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रिय निग्रह तीर्थ,
मनः शुद्धि यह परम तीर्थ हैं तीर्थ इन्हें ही जानो।
पाप दूर हो जाते यात्रा करने से तीर्थों में,
यह विश्वास पाप का वर्धक, इसको कभी न मानो।
तीर्थ रूप होते हैं गुरुजन, ब्रह्मनिष्ठ जो ज्ञानी,
उनकी सङ्गति करके तुम भी धर्म शुद्ध पहिचानो।
पढ़ो वेद शास्त्रों को श्रद्धा पूर्वक तुम शुभ यज्ञ करो,
होता है कल्याण इसी से नर का यह नित मानो।
जीवन को सुपवित्र बनाओ व्यसनों को तुम दूर भगाओ,
परहित जीवन सदा लगाओ, तीर्थ उसी को मानो।

॥ ओ३म् ॥

(१)

पूजनीय प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए,
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये।
वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें,
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें।
अश्वमेधादिक रचाएँ यज्ञ पर उपकार को,
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें,
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।
भावना मिट जायं मन से पाप अत्याचार की,
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर नारि की।
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए,
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो,
इदन्नमम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे,
नाथ करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे।

(२)

यज्ञ जीवन का हमारे श्रेष्ठ सुन्दर कर्म है,
यज्ञ का करना कराना आर्यों का धर्म है।
यज्ञ से दिशि हों सुगन्धित, शान्त हो वातावरण,
यज्ञ से सद्भावना हो, यज्ञ से शुद्ध आचरण।
यज्ञ से हो स्वस्थ काया व्याधियाँ सब नष्ट हो,
यज्ञ से सुख सम्पदा हो, दूर सारे कष्ट हों।

यज्ञ से दुष्काल मिटते, यज्ञ से जल वृष्टि हो,
यज्ञ से धन-धान्य हो, वहु भाँति सुखमय सृष्टि हो,
यज्ञ है प्रिय मोक्ष दाता, यज्ञ शक्ति अनूप है,
यज्ञमय यह विश्व है, विश्ववेश यज्ञ स्वरूप है।
यज्ञमय अखिलेश ऐसी आप अनुकम्पा करें,
यज्ञ के प्रति आर्य जनता में अमित श्रद्धा भरें।
यज्ञ पुण्य 'प्रकाश' से सब पाप ताप तिमिर हरें,
यज्ञ नौका से अगम संसार सागर से तरें।

(३)

न मैं धाम धरती न धन चाहता हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहता हूँ।
रटे नाम तेरा मैं चाहूँ वह रसना,
सुनें यश तेरा वह श्रवण चाहता हूँ।
विमल ज्ञान धारा से मस्तिष्क उर्वर,
व श्रद्धा से भरपूर मन चाहता हूँ।
करें दिव्य दर्शन तेरा जो निरन्तर,
वही भाग्यशाली नयन चाहता हूँ।
'प्रकाश' आत्मा में अलौकिक तेरा है,
परम ज्योति प्रत्येक क्षण चाहता हूँ।

(४)

सुवह शाम जिसको तेरा ध्यान होगा,
वड़ा भाग्यशाली वह इन्सान होगा।
उसी को तो हरदम लगन तेरी होगी,
कि जिस पर तू खुद ही मेहेरवान होगा,
तेरे नाम से जो भी गाफिल रहेगा,
समझ लो वड़ा ही वह नादान होगा।

हृदय में ही जिसने है तुझको टटोला,
लगाए खाक तन पर वो इन्सान होगा।
तुझे प्यास है तो पीले प्रेम प्याला,
इसे वह पिये जो कदरदान होगा।

(५)

मधुर ओम का जाप किए जा किए जा,
तू आधार उसका लिए जा लिए जा।
सदा अन्न भूखों को नंगों को कपड़ा,
जहाँ तक बने तू दिए जा दिए जा।
घृणा द्वेष अभिमान से मानवों के,
हृदय फट रहे हैं सिए जा सिए जा।
धरा धाम धन कुछ न जायेंगे संग में,
तू धन धर्म संग में लिए जा लिए जा।
सरस संयमी स्वस्थ स्वाधीन बनकर,
तू सौ वर्ष जग में जिए जा जिए जा।
'प्रकाशार्य' चढ़के कभी जो न उतरे,
वही प्रेम प्याला पिए जा पिए जा।

(६)

प्रभु जी हमें एक तेरा सहारा,
है तूने बनाया ये संसार सारा।
ये नदियाँ व पर्वत हैं तूने बनाए,
चमकता है चाँद और सूरज सितारा।
दिया वेद का ज्ञान तूने है हम को,
फलों फूलों में देखते हैं नजारा।
कृपा से तेरी चोला नर तन का पाया,
तेरी भक्ति में वीते जीवन हमारा।

न मन में बूरे भाव आवे हमारे,
न शुभ कर्म से होवे हर्गिज किनारा।
करें हवन संध्या पढें वेद वाणी,
तेरे प्रेम की ही बहे मन में धारा।
तेरे 'लाल' के पाप सब छूट जायें,
जरा सा भी हो जाय तेरा इशारा।

(७)

ओ३म् ही सब का सहारा एक है,
सोच प्राणी विश्व सारा एक है।
वही ही है माता पिता बन्धु सखा,
नित्य ही रक्षक हमारा एक है।
वेद मारग छोड़कर क्यों भटकता,
एक है किश्ती किनारा एक है।
प्राणी मात्र से किया कर प्रेम तू,
वेद का यह ही इशारा एक है।
खाता क्यों 'नन्दलाल' दर-दर ठोकरें,
एक है मुक्ति का द्वारा एक है।

(८)

सत्ता तुम्हारी भगवन जग में समा रही है,
तेरी दया सुगन्धी हर गुल में आ रही है।
रवि चन्द्र और तारे तूने बनाये सारे,
इन सब में ज्योति तेरी इक जगमगा रही है।
विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाए तूने,
तह जिनकी मोतियों से अब चमचमा रही है।
दिन रात प्रातः संध्या मध्यान भी बनाया,
हर ऋतु पलट पलटकर करतब दिखा रही है।

सुन्दर सुगन्धी वाले पुष्पों में रङ्ग है तेरा,
यह ध्यान फूल पत्ती तेरा दिला रही है।
है ब्रह्म विश्व कर्त्ता वर्णन हो तेरा कैसे,
जल थल में तेरी महिमा हे ईश छा रही है।
भक्ति तुम्हारी भगवन क्यों कर हमें मिलेगी,
माया तुम्हारी स्वामी हमको भुला रही है।
'देवी चरण' शरण है तुमसे यही विनय है,
हो दूर यह अविद्या हमको भुला रही है।

(६)

हे दीनबन्धु स्वामी सुन लो पुकार मेरी,
जीवन न बीत जाय अब तो शरण हूँ तेरी।
निर्बल हूँ मैं तू जाने कैसे लगूँ ठिकाने,
नौका पड़ी भँवर में है पाप ने जो घेरी।
कब से भटक रहा हूँ एक सोच में पड़ा हूँ,
कैसे किनारा पाऊँ जब हो दया न तेरी।
दुख दर्द की घटायें चारों तरफ से आई,
पापों की हैं सजायें बिगड़ी दशा है मेरी।
मैं जाऊँ अपनी गाथा तुमसे कहाँ छिपाता,
कर दो क्षमा विधाता जो कुछ है भूल मेरी।
लाखों जनम गवांए आवागमन में सारे,
सङ्ग मिलन में तेरे हो नाथ अब न देरी।
जीवन के दिन हैं कितने बाकी रहे हैं जितने,
गुजरें तेरी ही धुन में यह कामना मेरी।

(१०)

भगवन मेरा सहारा तेरे सिवा नहीं है,
आधार एक तू है और दूसरा नहीं है।

तू वन्धु, तू सखा है तू बाप, तू माँ है,
तेरे सिवाय कोई माता पिता नहीं है।
वह कौन वस्तु लाऊँ जिसको तुझे चढ़ाऊँ,
जो कुछ है सब है तेरा कुछ भी मेरा नहीं है।
मैं भी तो मैं नहीं हूँ मेरा कहाँ ठिकाना,
सर्वस्व तू है भगवन, तू क्या है क्या नहीं हैं।
धीमी सुलग रही है, कर तेज आग अपनी,
मेरे ममत्व का मम सारा जला नहीं है।
दीपक में ज्यू पतंगा जब तक कि 'वीर' कोई,
तुझ में जला नहीं है, तुझ से मिला नहीं है।

(११)

हे विश्व नाथ मन का चञ्चलपना मिटा दे,
कुटिया में शान्ति को आनन्द से बिठा दे।
अज्ञान मेरा मुझ से हे नाथ दूर कर दे,
अज्ञानता से बिगड़े कारज सभी बना दे।
ऐसा अनुग्रह कर दे, खुल जाँय ज्ञान चक्षु,
इन चक्षुओं से अपना सुप्रकाश तू दिखादे।
दुनियाँ के जो विषय हैं इनसे है युद्ध मेरा,
अपनी दयालुता से मुझको विजय दिला दे।
भटकता हुआ मुसाफिर बहका ही बहका फिरता,
मंजिल पे जल्द पहूँचे वह रास्ता दिखादे।
केवल तेरी लगन में बेसुध रहूँ हमेशा,
अमृत का एक प्याला ऐसा मुझ पिलादे।

(१२)

तव वन्दन हे नाथ कर हम।
तव चरणों की छाया पाकर,

शीतल सुख उपभोग करें हम, तव ...
भारत जननी की सेवा का ।
व्रत धारण व्रत नाथ करें हम, तव ...
माता के दुख हरने के हित ।
न्यौछावर निज प्राण करें हम, तव ....
पाप शैल को तोड़ गिरा कर ।
वेदज्ञा इक शीश धरें हम, तव ...
राग द्वेष को दूर भगा कर ।
प्रेम मन्त्र का जाप करें हम, तव ...
प्रातः सायं तुझ को ध्यायें ।
भव सागर से पार तरें हम, तव ....
फूले दयानन्द की फुलवारी ।
विद्या मधु का पान करें हम, तव ....

(१३)

अगर तुझको प्यारा सदाचार होगा,
तो निश्चय तेरी ओर संसार होगा ।
मनुज हो मनुज के न तू काम आया,
जो जग में तेरा जन्म निस्सार होगा ।
हनुमान से जिसमें हो भक्ति शक्ति,
निकट विघ्न वारिध से वो पार होगा ।
मिले बच्चे बच्चे को सद्धर्म शिक्षा,
तभी देश भारत का उद्धार होगा ।
'प्रकाशार्य' प्रभु तुझ से खुश क्यों न होगा,
जो प्रभु के सुतों से तुझे प्यार होगा ।

(१४)

प्रभु बुद्धि निर्मल हमारी बना दो,
पिता अपनी भक्ति का अमृत पिला दो।
न मन में हमारे कभी हो अँधेरा,
न अज्ञान हो ना अविद्या का डेरा।
सदा आस्था में हो सुप्रकाश तेरा,
हमें धर्म की राह पे चलना सिखादो। प्रभु ...
तेरे चरणों में ध्यान अपना लगावे,
न मन रूपी शीशे को मैला बनावे।
कभी सत्य मारग से पग ना हटावे,
सदाचार का पाठ हम को पढ़ा दो। प्रभु ...
कभी हमने भक्ति में मन ना लगाया,
विषय और विकारों में जीवन बिताया।
शरमसार होकर तेरे द्वार आया,
भँवर में है किश्ती किनारे लगा दो। प्रभु .

(१५)

प्रभु मन के मन्दिर में ही पाइएगा,
उसे ढूढ़ने बाहर न जाइयेगा।
यह चाँद और सूरज ये पृथ्वी सितारे,
लगातार चलते हैं जिसके सहारे।
उसे जर्रे जर्रे में ही पाइयेगा, प्रभु ...
तू भीतर के पट खोल बाहर के कर बन्द।
मिलेंगे तुझे निश्चय ही सच्चिदानन्द,
कठिन है ये मारग न घबराइयेगा। प्रभु ..
सभी जीवों का एक वह ही सहारा,
रचा जिसने सुन्दर ये संसार सारा।

उसी की शरण में जरा आइएगा, प्रभु ..
यदि चाहता है तू भक्ति पाना।
न विषयों में 'नन्दलाल' मन को लगाना,
प्रभु भक्ति के गीत ही गाइएगा। प्रभु ..

(१६)

ओ३म् है जीवन हमारा, ओम प्राणाधार है,
ओ३म् है कर्त्ता विधाता, ओ३म् पालन हार है।
ओ३म् है दुख का विनाशक, ओम सर्वानन्द है,
ओ३म् है बल तेज धारी, ओम करुणा कन्द है।
ओ३म् सबका पूज्य है, हम ओम का पूजन करें,
ओ३म् के ही ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।
ओ३म् के गुरु मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन,
बुद्धि नित प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन।
ओ३म् के जाप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायगा,
अन्त में यह ज्ञान हमको मुक्ति तक पहूँचायेगा।

(१७)

हर समय भगवान का ही ध्यान मेरे मन में हो,
शान्ति के शुभ मूल का ही भान मेरे मन में हो।
प्राण का भी प्राण हैं जो, मन का मन करुणानिधान,
सर्व संकट हारी हरि का ध्यान मेरे मन में हो।
लोक लोकान्तर बनाता जो निराकृत शक्ति से,
सर्व शक्ति निधान विभु का भान मेरे मन में हो।
सूर्य सरिता सिन्धु पर्वत गान जिसका कर रहे,
उस महा महिमेश का नित ध्यान मेरे मन में हो।
शान्ति कान्ति निधान जो है दिव्य जिसकी शान है,
उस सुखद परमेश का प्राणिधान मेरे मन में हो।

(१८)

प्रभु सङ्ग प्रीती लगाए चला जा,
उसे इष्ट अपना वनाए चला जा।
पड़ी है जो सूनी तेरे दिल की बस्ती,
प्रभु प्रेम से तू बसाए चला जा।
अँधेरी हुई जो तेरे मन की नगरी,
प्रभु ज्योति से जगमगाए चला जा।
वो है दीन दुखियों का हरदम सहाई,
उसे तू भी दुखड़ा सुनाए चला जा।
तू खुश रह उसी में जो उसकी रजा हो,
मुसीबत में भी मुसकराए चला जा।
लगा नेक कामों में अपना तू जीवन,
कि बन नेक नेकी कमाए चला जा।
लगा रह प्रभु भक्ति में ही तू निशि दिन,
प्रभु गोद में सुख को पाये चला जा।

(१९)

तेरी प्रेम भक्ति का वर माँगते हैं,
नहीं कोई यही माँगते हैं।
नहीं कोई इच्छा तेरे सिवा देने वाला,
इसी एक उम्मीद पर माँगते हैं।
बुरे भाव से जो किसी को न देखे,
हम आँखों में ऐसी नजर माँगते हैं।
जो वेताब जुल्मों सितम देखकर हो,
तड़पता हुआ वह जिगर माँगते हैं।
रहे धर्म जाति का सर सब्ज गुलशन,
यही तुझसे हे ईश हम माँगते हैं।

(२०)

अगर पाप में आपका दिल नहीं है,
तो ईश्वर का मिलना भी मुश्किल नहीं है।
न हो जिसको बन्दों से उसके मोहब्बत,
वो बन्दा कहलाने के काबिल नहीं है।
तुझे दुनियाँ कावू में कर लेगी नादां,
जो काबू में तेरे तेरा दिल नहीं है।
जिसे दुनियाँ कहते हैं ए दुनियाँ वाला,
कर्म क्षेत्र है कोई महफिल नहीं है।
नहीं मरना आता जिसे है धरम पर,
तो जीने का उसके कुछ हासिल नहीं है।
हथेली पे हो जिसका सर इसमें कूदे,
ये दरिया है वह जिसका साहिल नहीं है।
'मुसाफिर' न तू पाँव पीछे हटाना,
जरा और चल दूर मञ्जिल नहीं है।

(२१)

सत्यसंग की गङ्गा बहती फिर नहाता क्यों नहीं,
भाग्य तेरा सो रहा इसको जगाता क्यों नहीं।
देख कितने पतित जीवन धुल के कुन्दन बन गये,
लक्ष्य उनको अपने जीवन का बनाता क्यों नहीं।
पाप की दुनिया में रहकर सह रहा सङ्कट है क्यों,
धर्म की नगरी बसा आनन्द पाता क्यों नहीं।
है भारी संसार में तेरे लिए सुख सम्पदा,
फिर यथोचित लाभ इससे तू उठाता क्यों नहीं।
'देश' अमृत पुत्र है भगवान का भूला हुआ,
समझ कर कर्तव्य की बिगड़ी बनाता क्यों नहीं।

(२२)

भक्त जीवन का मजा जगदीश गुण गाने में है,
ईश भक्ति में सरापा मस्त हो जाने में हैं।
तार होय साजे दिल पर नगमये वहदत अलप,
राजे तस्कीन कलब ईश्वर भजन गाने में है।
तालिबे दीदार है तू दिल के आइने में देख,
ना वो मस्जिद में न गिरजे में न बुतखाने में है।
आसरा भगवान का ले उससे रु गरदां न हो,
रूठने में कुछ नहीं है लाभ मन जाने में है।
आरजी लज्जाते दुनियावी पे क्यों भूला है तू,
दायमी आनन्द राहत मोक्ष सुख पाने में है।
जा दरे साकी पे पी, कर दे जो मतवाला तुझे,
वह मये पुरकौफ उस साकी के पैमाने में है।
वज्द का आलम है तारी बेखुदी छाई हुई,
कितना मीठा रस भरा 'तालिब' तेरे गाने में है।

(२३)

क्या कहें क्या भक्त पाता है प्रभू के ध्यान में,
कुछ अलौकिक रस मिले जब मन लगे भगवान में।
ज्ञान के आलोक से जब जगमगाता है हृदय,
रङ्ग विरंगे फूल खिलते आत्मिक उद्यान में।
संशयों का नाश होता, पाप के बन्धन कटें,
साधना का मार्ग मिलता आत्मिक उत्थान में।
विषय विष से जान पड़ते वासना की प्यास ना,
तब न आकर्षण रहे, कुछ काम क्रोध अभिमान में।
यूँ लगे सर्वत्र ही आनन्द वर्षा हो रही,
भक्त जब हो मग्न लगता ओ३म् के गुण गान में।

'पाल' गूँगा किस तरह गुण मधुरता कह सके,
मधुरता, अनुभूति रहती मगर उसके ज्ञान में।

(२४)

प्रभु को विसार किसकी आराधना करूँ मैं,
पाकर के कल्प तरु को क्या चाहना करूँ मैं।
मोती मिला जो मुझको मानस के मानसर में,
कङ्कर बटोरने की क्या कामना करूँ मैं।
घट-घट में बस रहे हैं सबके परम पिता वह,
लघु जान क्यों किस की अवहेलना करूँ मैं।
मुझको 'प्रकाश' प्रति पल आनन्द आन्तरिक है,
जग के क्षणिक सुखों को क्या चाहना करूँ मैं।

(२५)

ऐ मेरे भगवान तेरी लीला अपरम्पार है,
यह अद्भुत और सुन्दर तेरा रचा हुआ संसार है।
सूरज चाँद सितारों को, पृथ्वी सब्जा जारों को,
देख के इन नज्जारों को चकित हुआ संसार है।
महिमा तेरी गायें क्या, भेद पिताजी पायें क्या,
ताकत जोर लगायें क्या, कुदरत पर बलिहार है।
पर्वत पेड़ गुफाओं में, जङ्गल और दरियाओं में,
बिजली और हवाओं में रमा हुआ करतार है।
प्रभु जी हमको ज्ञान दो, भक्ति का वरदान दो,
शुद्ध बुद्धि भगवान दो, आए तेरे द्वार है।
दीनानाथ दयालु तू, जग बन्धु जग पाल तू,
निर्भय नित्य अकाल तू, अनुपम सर्वाधार है।
अपनी शरण लगाओ प्रभु, सन्मार्ग दिखाओ प्रभु,
अपनी गोद बिठाओ प्रभू, आए तेरे द्वार है।

तुम हो प्रभु चाँद मैं हूँ चकोरा,
तुम हो कमल फूल मैं रस का भौंरा।
ज्योती तुम्हारी का मैं हूँ पतङ्गा,
आनन्द घन तुम हो मैं वन का मोरा।
जैसे है चुम्बक की लोहे से प्रीती,
आकर्षण करे मोहे लगातार तोरा।
पानी बिन मीन हो जैसे व्याकुल,
ऐसे ही तड़पाये तोरा बिछोरा।
एक बूँद जल का मैं प्यासा हूँ चातक,
करो अमृत वर्षा हरो ताप मोरा।

(२७)

तुम्हारी दया से जो आनन्द पाया,
वह वाणी से जायेगा क्यों कर बताया।
ये वह रस नहीं है जिसे रसना चाखे,
नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया।
नहीं है ये वह गंध जो घ्राण सूँघे,
त्वचा से न जाए ये, छुआ छुआया।
न संख्या में आना ही सम्भव है उसका,
दिशा काल में भी नहीं वह समाया।
न तुझ सा है दाता कोई और दानी,
कि इतना बड़ा दान जिसने दिलाया।
चरितोन्नति में तुम्हारी दया से,
मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया।
वह सत है वो चित है वो आनन्दमय है,
मुझे मेरे अनुभव ने निश्चय कराया।

अमीचन्द गूँगे की रसना के सदृश,
ये कैसे वतावें कि क्या स्वाद आया।

(२८)

जब तलक मन मलिनता पाप है,
तब तलक यह व्यर्थ पूजा जाप है।

है वहीं बस स्वर्ग का वातावरण,
जिस जगह सत्संग प्रेमालाप है।

भौंकता ज्यों श्वान निज प्रतिविम्ब लख,
शत्रु अपना त्यों बना तू आप है।

है परम ऐश्वर्य प्रभु का चिन्तवन,
भूल जाना ही परम सन्ताप है।

ले 'प्रकाशाधार' सर्वाधार का,
कर रहा क्यों द्वार-द्वार विलाप है।

(२९)

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।

सदा से आप दीनों का प्रभु उद्धार करते हैं,
हमें भी दीन हालत से पतित पावन उठा देना।

हमारे ध्यान में आओ प्रभो आँखों में बस जाओ,
अंधेरे मन के अन्दर ही परम ज्योती जगा देना।

वहा दो प्रेम की गंगा दिलों में प्रेम का सागर,
हमें मिलजुल के आपस में प्रभो रहना सिखा देना।

हमारा धर्म हो सेवा, हमारा कर्म हो सेवा,
सदा आदर्श हो सेवा प्रभो सेवक वना देना।

(३०)

भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा,
यह जीवन बीत जायगा कभी रोना नहीं होगा।
कभी दुख है कभी सुख है ये जीवन धूप छाया है,
हँसी में ही बिता डालो, बितानी ही ये माया है।
जो सुख आए तो हँस देना, जो दुख आए तो सह लेना,
न कहना कभी कुछ जग से, प्रभू से ही तू कह देना।
ये कुछ भी तो नहीं जग में तेरे बस कर्म की माया,
तू खुद ही धूप में बैठा लख निज रूप को छाया।
कहाँ ये था कहाँ तू था कभी तो सोच ए बन्दो,
झुका कर शीश को कह दे प्रभो वन्दे प्रभो वन्दे।

(११)

मगन ईश्वर की भक्ति में अरे मन क्यों नहीं होता,
पड़ा आलस्य में मूर्ख रहेगा कब तलक सोता।
जो इच्छा है तेरे कट जायें सारे मैल पापों के,
प्रभो के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तू धोता।
विषय और भोग में फँस कर न कर बर्बाद जीवन को,
दमन कर चित्त की वृत्ति लगा ले योग में गोता।
नहीं संसार की वस्तु कोई भी सुख की हेतु है,
वृथा इनके लिये फिर क्यों समय अनमोल तू खोता।
धर्म ही एक ऐसा है जो होगा अन्त को साथी,
न पत्नी काम आयेगी न बेटा और कोई पोता।
भटकता जा बजा नाहक तू क्यों सुख के लिये 'सालिक',
तेरे हृदय के भीतर ही वह आनन्द का सोता।

(३२)

तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा लेके आया हूँ,
पिला दो प्रेम का अमृत पिपासा लेके आया हूँ।
रतन अनमोल लाते लाने वाले भेंट को तेरी,
मैं केवल आँसुओं की मंजु माला लेके आया हूँ।
जगत के रङ्ग सव फीके तो अपने रङ्ग में रङ्ग दे,
मैं अपना महा वदरङ्ग बाना लेके आया हूँ।
'प्रकाशानन्द' हो जाये मेरी अँधेरी कुटिया में
तुम्हारा आसरा विश्वास आशा लेके आया हूँ।

(३३)

तेरी आज्ञा का पालन ही केवल कामना मेरी,
वनी रहे भाव संशुद्धि यही हो भावना मेरी।
मेरे जीवन का हो उद्देश्य परमानन्द को पाना,
तेरे अनुरूप बन जाऊँ यही हो याचना मेरी।
तेरे ही ज्ञान सागर में लगाऊँ रात दिन गोते,
मैं तुझ में ही समा जाऊँ यही हो साधना मेरी।
तेरे सत के सरोवर का ये मानस हंस बन जाये,
तेरी ज्योती के मोती से यह चमके अर्चना तेरी।

(३४)

हृदय को हम सदा तेरे लिये तय्यार करते हैं,
तुझे आनन्द सा सुख सा सदा हम प्यार करते हैं।
तुझ हंसता हुआ देखें किसी दुखिया के मुखड़ पर,
इसी से सत्पुरुष प्रत्येक का उपकार करते हैं।
बताते हैं पता तारे गगन में और उपवन में,
सुमन संकेत तेरी ओर बारम्बार करते हैं।
अनोखी बात है तेरे निराले प्रेम वन्धन में,
उलझकर भक्त उलझन में जगत को पार करते हैं।

न होती आह तो तेरी दया का क्या पता होता,
इसी से दीन जन दिन रात हा-हाकार करते हैं।
मुझे तो सींचने दे आँसुओं से पन्थ जीवन का,
जगत के ताप का हम तो यही उपचार करते हैं।

(३५)

प्रभु का नाम ले बन्दे वही सब का सहारा है,
वही माता पिता सबका वही बन्धु हमारा है।
तुझे प्यारे हैं धन दौलत, पिता-माता बहन-भाई,
प्रभु से प्यार कर प्राणी वह प्राणों से भी प्यारा है।
तुझे उसने बनाया तू भी उसका बनके रह जग में,
हमें बनना है उसका वह तो पहले ही हमारा है।
यह पृथ्वी और यह आकाश, सागर पर्वतों जंगल,
ये सूरज भी उसी का है उसी का चाँद तारा है।
ये क्या रचना रची जगदीश ने बलिहारी जाऊँ मैं,
रमा है सारे जग में फिर भी वह इस जग से न्यारा है।
थके योगी मुनि सारे तपस्वी ध्यान धर-धर के,
न महिमा उसकी का पाया किसी ने पारवारा है।
पड़ी मझधार में नइया लगे हरि नाम का चप्पू,
तेरी जीवन की नौका का वही अन्तिम सहारा है।

(३६)

सफल होता है जीवन में नेक कर्मों की कमाई से,
यकीं जानों कोई नेकी नहीं बढ़ कर भलाई से।
कोई जाहिर में है अच्छा कोई मीठा जबाँ का है,
हकीकत दिल की वावस्ता है बातिन की सफाई से।
बड़ा वह है जो अपने आपको छोटा समझता है,
बड़ा कोई बना करता नहीं अपनी बड़ाई से।

जमाना था आपस में रहा करते थे मिलजुल कर,
जमाना आ गया है लड़ रहा है भाई भाई से।
वनावट की तरक्की के लिये वेकार है कोशिश,
न कायल हो सकेगा अम्न दुनियाँ में लड़ाई से।
प्रभु भक्ति से होकर दूर कुछ हासिल नहीं होता,
परेशाँ जिन्दगी होती है झूठी पारसाई से।
पयामे वेद ही तस्कीन दे सकता है दुनियाँ को,
वचा सकता है दुनियाँ को जिहालत की बुराई से।

(३७]

प्रभु का भजन कर प्यारे वुराई छूट जाएगी,
हृदय में साधना को साध ज्योति जाग जायेगी।
न पूँजी पुण्य कर्मों को स्व जीवन में इकट्ठी की,
तो अन्तिम काल पश्चाताप की ज्वाला जलायेगी।
मिलेगा मार्ग मुक्ति का मिटेगा मोह भक्ति का,
अगर मुक्ति भरी वाणी प्रभु का गीत गायेगी।
कुचिन्तन से हटा मन को सुचिन्तन में लगा मनको,
विचारों की सुपावनता तुझे ऊँचा उठायेगी।
अगर एकाग्र मन अध्यात्म का अभ्यस्त बन जावें,
तो अन्तःकरण की गङ्गा विजय धारा वहायेगी।
अगर पतवार श्रद्धा का सहारा छोड़ बैठोगे,
तो भवसागर में पगले 'पाल' नइया डूब जायेगी।

(२८)

भजन भगवान का करले दयामय पतित पावन का,
यही है तथ्य जीवन का, यही है लक्ष्य नर तन का।
हृदय हो शुद्ध तो होती उदय अनुभूति ईश्वर की,
प्रभु का प्यार पाना तो मिटा दो मैल सब मन का।

बुरे के संग से आती बुराई भूल पापों की,
अगर अपना भला चाहो करो सत्संग सज्जन का।
क्षणिक सौन्दर्य है संसार का क्यों मान करता है,
उतर जायेगा दो दिन में नशा यह रूप यौवन का।
प्रभु भक्ति परम शक्ति यही है सच्ची सम्पत्ति,
विपत्ति में फँसोगे जो करोगे लोभ तुम धन का।
जहाँ भगवद् भजन होता वहीं सब तीर्थ बन जाते,
बनालो घर में ही वातावरण प्यारो तपोवन का।
समाधी योग की सिद्धी यही है इष्ट तो प्यारो,
प्रथम यम नियम को पालो, करो अभ्यास आसन का।
बचा थोड़ा है जीवन अब भजन भगवान का करलो,
भरोसा 'लाल' अब कुछ भी नहीं है एक भी क्षण का।

(३६)

ईश्वर तुम्हीं दया करो तुम बिन हमारा कौन है,
दुर्बलता दीनता हरो तुम बिन हमारा कौन है।
माता तुही तुही पिता बन्धु तुही तुही सखा,
तू ही हमारा आसरा तुझ बिन हमारा कौन है।
तेरी दया को छोड़ कर कुछ भी नहीं हमें खबर,
जायें तो जायें हम किधर तुझ बिन हमारा कौन है।
तेरी लगन तेरा मनन, तेरी भक्ति तेरा भजन,
तेरी ही आये हम शरण तुझ बिन हमारा कौन है।
बालक हैं हम सभी तेरे तू है पिता परमात्मा,
श्रेष्ठ मार्ग पर चला तुझ बिन हमारा कौन है।

(४०)

याद तू करले ए मना प्रभु की मेहेरबानियाँ,
जगत की वासनाओं में मत तू गंवा जवानियाँ।

व्यापक जो डाली पात में फूल में और शूल में,
ये सूर्य चन्द्र तारागण उसकी हैं सब निशानियाँ।
कर्ता है जो जहान का, दाता है मोक्ष ज्ञान का,
उसकी शरण में तू लगा अपनी दे जिन्दगानियाँ।
दुनियाँ सराय फानी है, हर वस्तु आनी जानी है,
भजले प्रभु के नाम को छोड़के सब हैरानियाँ।
भूमि मिली निवासी को पानी पीने के लिए,
कैसी सुहानी है रची वेदों सुन्दर बानियाँ।

(४१)

विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन,
क्यों न हो उसको शान्ति क्यों न हो उसका मन मगन।
काम, क्रोध, लोभ मोह शत्रु हैं सब महाबली,
इनके हनन के वास्ते जितना हो तुझसे कर यतन।
ऐसा बना स्वभाव को चित्त की शान्ति से तू,
पैदा न हो ईर्ष्या की आग दिल में करे कहीं जलन।
मित्रता सबसे मन में रख त्याग कर बैर भाव को,
छोड़ दे टेढ़ी चाल को ठीक कर अपना तू चलन।
जिससे अधिक न है कोई जिसने रचा है यह जगत,
उसका ही रख तू आसरा उसकी ही तू रख शरण।
छोड़के राग द्वेष को मन में तू उसका ध्यान कर,
तुझपे दयालु होवेंगे निश्चय है वह परमात्मन।
आप दया स्वरूप हैं आप ही का है आसरा,
दृष्टि कृपा की कीजिए मुझ पे हो जब समय कठिन।
मन में हो मेरे चाँदना भोर का रास्ता मिले,
मार के मन जो 'केवला' इन्द्रियों को करे दमन।

(४२)

ईश्वर से करता जाना प्यार ओ नादान मुसाफिर,
नइया लगाते जाना पार ओ नादान मुसाफिर।
प्रीति ना तोड़ देना हिम्मत न छोड़ देना,
वर्ना तू डूबेगा मझधार ओ नादान मुसाफिर।
नेकों की सङ्गत करना, बदियों से हरदम बचना,
जीना जो चाहे दिन चार ओ नादान मुसाफिर।
जब तक है जोशे जवानी हर बिगड़ी बात बनानी,
होने ना पावे अत्याचार ओ नादान मुसाफिर।
जीवन में सुरभि भरले, जग को सुगन्धित करदे,
करना जो चाहे मौज बहार ओ नादान मुसाफिर।
ईश्वर से प्रेम रखना प्रति फल मुक्ति चखना,
वर्ना तू डूबेगा मझधार ओ नादान मुसाफिर।

(४३)

भारत का कर गया बेड़ा पार वह मस्ताना योगी,
सोतों को कर गया फिर बेदार वह मस्ताना योगी।
ईंटें और पत्थर खाये, गोली से ना घबराये,
घातक से वह अपने कर गया प्यार वह मस्ताना योगी।
भूले थे वेद की वाणी, करते थे सब मनमानी,
वेदों का कर गया फिर प्रचार वह मस्ताना योगी।
विधवा उद्धार करके शुद्धी प्रचार करके,
दलितों पै कर गया फिर उपकार मस्ताना योगी।
पापी थे पाप करते, ईश्वर से ना थे डरते,
जड़ से मिटा गया अत्याचार वह मस्ताना योगी।
कोई शुभ काम ना था, प्रीती का नाम न था,
हर जां बहा गया प्रेम की धार वह मस्तान योगी।

वेदों की रक्षा करके वेड़े को तैयार करके,
'देश' का कर गया वेड़ा पार वह मस्ताना योगी।

(४४)

धन्य है तुझको ऐ ऋषी तूने हमें जगा दिया,
सो सो लुट रहे थे हम तूने हमें जगा दिया।
अन्धों को आँखें मिल गईं, मुर्दों जान आ गई,
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया।
वाणी में क्या तासीर थी, तेरे वचन में ऐ ऋषी,
कितने शहीद हो गए कितनों ने सर कटा दिये।
अपने लहू से लेखराम तेरी कहानी लिख गया,
तूने ही लाला लाजपत शेरे बवर वना दिया।
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने पे खाई गोलियाँ,
हँस हँस के हंसराज ने तन मन व धन लुटा दिया।
तेरे दीवाने ऐ ऋषी दक्षिण दिशा को चल दिये,
वैदिक धर्म पे हो फिदा दुनियाँ का दिल हटा दिया।

(४५)

देखा न कोई देवता प्यारे ऋषी की शान का,
सर पर सही मुसीबतें, सोचा भला जहान का।
पी पी के प्याले जहर के करते गए परोपकार,
चिन्ता है प्यारे धर्म की इच्छा नहीं है मान की।
घर घर बजाई वेद की प्यारे ऋषी ने बाँसुरी,
ऐसा दिवाना था गुरु वंशी की मीठी तान का।
पत्थर वा ईंट खा गये करते रहे नित नेकियाँ,
किस्सा में क्या सुना सकूँ ऐसे ऋषि महान का।
वैदिक धर्म के वास्ते लाखों सहीं मुसीबत,
जीवन में एक बार भी आया न ध्यान मान का।

ब्रह्मा से जैमिनी तलक करते गये जिस काम को,
शैदा बनाया देश को वेदों के उस फरमान का।

(४६)

दयानन्द देव वेदों का उजाला लेके आए थे,
करों में ओम की पावन पताका लेके आये थे।
न थे धन धाम मठ मन्दिर न संग चेली व चेला थे,
हृदय में वह अटल विश्वास प्रभू का लेके आए थे।
गऊ विधवा दलित दुखिया अनाथों दीन जन के हित,
नयन में अश्रुकण मानस में करुणा लेके आये थे।
अविद्या सिन्धु से अगणित जनों को पार करने को,
परम सुखदायिनी सत्संग नौका लेके आये थे।
कोई माने न माने सच तो यह ऋषिराज ही पहले,
स्वराज्य स्थापना का मन्त्र सच्चा लेके आये थे।
पिलाया जहर का प्याला उन्हीं नादान लोगों ने,
वह जिनके वास्ते अमृत का प्याला लेके आए थे।
'प्रकाशादर्श' शिक्षा का पुनः विस्तार करने का,
वही प्राचीन गुरुकुल का सन्देशा लेके आए थे।

(४७)

जब आन डटे रण भूमि में संग चेली थी न चेला था,
कोपीन थी एक कमण्डल था न पैसा था न धेला था।
सेना भी नहीं कोई अस्त्र नहीं और चले जिहालत से लड़ने,
निज जीवन में ब्रह्मचारी ने एक खेल अनोखा खेला था।
तर्कों के तीखे तीरों से मिथ्या विश्वास मिटा डाले,
इस कार्य को पूरा करने में जो संकट आये झेला था।
थे किले जो दम्भ पाखण्डों के, सबको चकना चूर किया,
टोने ताबीज सयानों का भी काटा सकल झमेला था।

हुई विजय सत्य की अन्तिम यह विद्वत मण्डल मान लिया,
होती न विजय क्यों 'देश' तेरी जब ईश्वर संग सहेला था।

(४८)

तज कर घर और बार को मात पिता के प्यार को,
करने पर उपकार को ऋषि भस्म रमा कर चल दिये।
जितने भी सांसारिक सुख थे सबको मन से छोड़ दिया,
ब्रह्मचर्य की भट्टी में ही अपने आपको झोंक दिया।
होके विरक्त संसार से, और विषयों की मार से,
नाते रिश्तेदार से प्रेम हटा कर चल दिये। तज.....
दुनिया के हर घर को समझा ब्रह्मचारी ने घर अपना,
वेद की विद्या को समझा था महा ऋषि ने धन अपना।
सत्य वेद का भाष्य कर, सत्यार्थ प्रकाश कर,
अन्धकार को नाश कर, ज्योति जगा कर चल दिये। तज ....
सर्दी गर्मी भूख प्यास के लाखों कष्ट उठाते रहे,
वेदों का प्रचार किया ईंटे और पत्थर खाते रहे।
आलस्य भगा संसार से, प्रेम प्रीति और प्यार से,
दुनिया के नर नार से भय भूत भगा कर चल दिये। तज.....
सम्वत् १९४० में वैदिक विगुल बजा करके,
मुक्ति पथ के पथिक बने आर्यों की सेज सजा करके।
वह पूर्णमाशी के चन्द्र थे, काँटे जग के फन्द थे,
जगत गुरु दयानन्द थे, जो विष को खाकर चल दिये। तज.....

प्रभू का आज करें शुभ गान।
ऋषि मुनि पार न पाय सके हैं सदियों से कर ध्यान ॥ प्रभू ...
वेद पढ़े षट शास्त्र पढ़े पर पूर्ण हुआ नहीं ज्ञान। प्रभू ....
अद्भुत पंछी फूल मनोहर, करते उसी का गान ॥ प्रभू ...
आओ हिलमिल मंगल गायें, गायें प्रभू गुण गान। प्रभू ...

(५०)

पिताजी तुम पतित उधारन हार।

दीन शरण कङ्गाल के स्वामी दुख के मोचन हार। पिता....
इस जग माया जाल भँवर में सूझे न सार असार,
सत्य ज्ञान बिन अन्ध सम डोलें, करें असत्य आचार। पिता ...
पाप प्रवाह भयङ्कर जल में, डूबत हैं मझधार,
तुम्हारी दया बिन को समरथ है करे दीनन को पार। पिता....
अपने स्वारथ के सब साथी, प्रिय कुटुम्ब परिवार,
हो निराश सब ओर से स्वामी आया तेरे द्वार। पिता ....
अब की बार दया करो हम पर हो जाय वेड़ा पार। पिता ....

(५१)

मइया बरस बरस रस बारी।

रुमझुम रुमझुम जल बरसत है, अमृत सम गुणकारी,
बूंद बूंद पर तेरी जाऊँ बार बार बलिहारी। मइया....
नदी सरोवर सागर बरसे लागी झरिया भारी,
मोरे आँगन क्यों ना बरसे, मैं क्या बात बिगारी। मइया ....
तू बरसे मैं मल न्हाऊ दोनों भूजा पसारी,
नयन मूंदकर नाचूं गाऊँ अपना आप बिसारी। मइया....

(५२)

तुम मेरी राखो लाज हरी।

तुम जानत सब अन्तर्यामी, करनी कुछ न हरी। तुम मेरी ....
अवगुण मोसे बिसरत नाहीं पल क्षण घड़ी घड़ी,
सब प्रपञ्च की पोट बाँधकर अपने सीस धरी। तुम मेरी ...
दारा सुत धन मोह लिये हैं सुध बुध सब विसरा,
सूर पतित को वेग उतारो, अब मेरी नाव भरी। तुम मेरी ...

(५३)

मांझी कितनी दूर किनारा ।
ओ मांझी कितनी दूर किनारा ।।
रात अंधेरी, नाव झिरी–झिरी, तेज बहती धारा । कितनी दूर ....
इस दुनियां की रात अंधेरी, रात अन्धेरी वात अन्धेरी ।
सूझे नहीं किनारा । कितनी दूर ....
बीच भँवर में नाव पड़ी है, मेरी तुझसे आस लगी है ।
तू ही खेवन हारा । कितनी दूर ..

(५४)

मेरा मेरे पथ पर आये ।
मेरे पथ पर चल न सके जो वह अपने घर जाये ।। मेरा ....
मेरा पथ कांटों से भरा है, चले जो पैर छिदाये ।
मेरे पथ पर नींद न आये, सो सो कर जग जाये । मेरा ....
मेरे पथ पर मृत्यु नाचे, कायर थरथराये ।
मेरे पथ पर चले जो कोई, तव मेरे दर्शन पाये ।। मेरा ....

(५५)

प्रभू के गुण, हरि के गुण गाऊँ मैं ।
मन की आशा पूरी करो प्रभू, मेरी विपदा आन हरो ।
बलि बलि जाऊँ मैं, गाऊं मैं ।
किसको मन की वात सुनाऊं, किसके द्वार प्रभू मैं जाऊं ।
पल में तारो पल में मारो, आप बिगाड़ो आप संवारो ।
किस विधि रिझाऊं मैं, गाऊं मैं ।।

(५६)

न गाया ईश गुण माया का, गुण गाया तो क्या गाया ।
न भाया पुण्य केवल पाप मन, भाया तो क्या भाया ।

तुम्हें संसार सागर में कमल की भाँति रहना था।
न छोड़ी वासना घर छोड़ा वन धाया तो क्या धाया ।।
विरह की आग निशिदिन ही तू तपता रहा प्राणी।
तुझे प्रियतम मिलन का स्वप्न ना आया तो क्या आया ।।
परम अनुपम गगनचुम्बी महल अपना बनाने को।
किसी दुखिया व निर्बल का ही घर ढाया तो क्या ढाया ।।
हमारा धर्म तो यह है खिलाओं औरों को पहले।
मधुर भोजन अकेले बैठकर खाया तो क्या खाया ।।

(५७)

जन्म जन्म का दुखिया प्राणी आया शरण तुम्हारी,
कदम कदम पर घोर मुसीबत सिर पै विपदा भारी। मैं आया ..
उठी है चारों ओर से आँधी, बुझ न दीपक मेरा,
तेरे जीवन की कुटियों में छा न जाय अन्धेरा।
तेज हवा से इसे बचा कर करना तुम रखवाली। मैं आया ..
ध्रुव सी मुझमें भक्ति देना, अभिमन्यु सी शक्ति देना,
वीर करण सा मुझे बनाना, दुनियां में वलिहारी। मैं आया ..
मेरे सारे संकट हरना, शरण पड़े की रक्षा करना,
तुझ बिन मेरा इस दुनियाँ में, कोई नहीं हितकारी। मैं आया ..

(५८)

मैं द्वार खोल कर बैठी हूँ तुम आ जाना भगवान।
तुमरे विना मन मन्दिर मेरा हुआ पड़ा सुनसान ।। तुम ..
गीता पूजा के याद नहीं हैं, जो चाहूँ प्रसाद नहीं है।
तुम हो दाता मैं हूँ भिखारी, क्या दूँ मैं बलिदान। तुम ....
धन की तो मुझे प्यास नहीं है, पर दर्शन की आस लगी है,
तनिक भक्त को भक्तनाथ की हो जाये पहिचान। तुम ...

(५९)

दिशि दिशि ज्योती समाई तेरी
अणु अणु में छवि छाई तेरी ।
ज्वाला मुखी प्रचण्ड शिखायें,
तडित लतायुत श्याम घटायें । देतीं सतत बधाई तेरी ।
रवि शशि नभमण्डल के तारे,
झिल मिल झिल मिल करते सारे । देते सतत बधाई तेरी ।
कल निनादिनी तरल तरंगा ।
अमृत वाहिनी यमुना गंगा । गातीं सतत बधाई तेरी ।
मन्द पवन सुरभित सुखकारी ।
दुखित हृदय संताप संहारी । देता सतत बधाई तेरी ।
दिशि दिशि ज्योति समाई तेरी ।

(६०)

रचना सब संसार की तेरी याद दिला रही,
जिस वस्तु को देखते ही तेरे गुण गा रही ।
वन पर्वत पृथ्वी नभ तारे करें इशारा आप का,
सूरज के भी अन्दर भगवन तेरी ज्योति समा रही ।
पक्षी गण हर शाख पे बोलें क्या क्या राग अलापते,
मीठी वाणी कोयल बोले तू ही तू बतला रही ।
गेंदा मोती चम्पा सारे हँस हँस के मुख खोलते,
फूल गुलाबी के भी अन्दर तेरी खुशबू आ रही ।
ऋषि मुनि और योगी सारे तुझ पर लट्टू हो रहे,
मीठी प्यारी वेद की वाणी 'देश' का मन हर्षा रही ।

(६१)

दुनियां की हर वस्तु भगवन तेरी याद दिला रही ।
पत्ता पत्ता डाली डाली तेरे ही गुण गा रही ।

सुन्दर है तेरी यह माया, पृथिवी सूरज चाँद बनाया,
पी पी करे पपीहा कोयल, सुन्दर राग सुना रही।
ऋषियों मुनियों ने है ध्याया, मन मन्दिर में तुझको पाया,
जर्रे जर्रे आप समाया, श्रुती यही बतलाती है।
रंग बिरंगे फूल खिलाये नदियां नाले खूब चलाये,
हाथों बिना पहाड़ बनाये समझ नहीं कुछ आती है।
दुनियां है सुन्दर फुलवारी फूल हैं जिसमें सब नरनारी,
देख के रचना जनता सारी जय जयकार मनाती है।
नदियों में सब जल ही जल बागों में सब फल ही फल हैं,
जंगल में सब हरिभावल है बदली मेंह बरसाती है।
आत्मा अपनी शुद्ध बनायें, वेद ज्ञान से लाभ उठांयें,
मन मन्दिर में 'नन्दलाल' आवाज यही अब आती है।

(६२)

आयें संकट घने चाहे शत्रु बने सब जमाना।
उस प्रभु को कभी ना भुलाना॥
वह है अपना तो संसार अपना,
वह विरोधी तो कोई न अपना।
बिना दया दृष्टि के इस सकल सृष्टि में ना ठिकाना। उस ...
लाखों बात की इक बात है यह,
पुण्य कर्मों की पूंजी कमाले।
भावना यज्ञमय शुद्ध पावन हृदय को बनाना। उस ...
उसको भूले सभी कष्ट आयें,
काम क्रोधादि शत्रु सतायें।
बनके धर्मात्मा चित्त परमात्मा में लगाना। उस ...
चाहो आयें न दुख रोग कोई,
है जगानी जो तकदीर सोई।
'लाल' तो भक्ति से उस परम शक्ति के गीत गाना। उस ...

(६३)

ईश्वर से प्यार ना किया तो प्यार क्या किया,
जीवन सुधार ना किया तो सुधार क्या किया।
कैसे जगत की योनियों में श्रेष्ठ योनि तू,
बाकी हैं सभी योनियाँ तू श्रेष्ठ योनि क्यों।
इतना विचार ना किया, विचार क्या किया। ईश्वर ...
निश्चय है जबकि मोक्ष का मारग न और है,
तेरा वचन आधार ना आधार और है,
उसका अधार ना लिया अधार क्या लिया। ईश्वर ...
देवों की शरण जा के फिर तू सोम रस को पी,
ईश्वर की वाणी वेद है घर-घर में जा सुना,
इतना भी प्यार ना किया तो प्यार क्या किया। ईश्वर ....
दुनिया के मोह को त्याग अपने मुँह को मोड़ लें,
सम्बन्ध जिन्दगी का तू ईश्वर से जोड़ लें,
तन-मन निसार ना किया निसार क्या किया। ईश्वर ....

(६४)

भीतर है सखा तेरा उसे मन टिका के देख,
अन्तःकरण में ज्ञान की ज्योति जगा के देख।
हैं इन्द्रियों की शक्तियाँ बाहर की ओर जो,
बाहर की ओर से इन्हें भीतर को मोड़ दो।
कर द्वार सकल बन्द समाधि लगा के देख। भीतर ...
साथी पवित्र देव हों बिगड़ी बने न क्यों,
जीवन तेरा ये भक्ति के रस में सने न क्यों,
उसको आदर्श भक्तों की भाँति बना के देख। भीतर ...
शुद्धात्मा से उसकी रचना का ध्यान कर,
निश्चय ही झूम जायेगा महिमा का ध्यान कर,
श्रद्धा की देवी रूठी हुई है मना के देख। भीतर ...

मिलता है सखा 'देश' इसी ही उपाय से,
मिलता नहीं कदापि वह अन्यत्र जाये से।
ईश्वर की वाणी वेद कहे आजमा के देख। भीतर .

(६५)

कल्याण मेरे इस जीवन का भगवान न जाने कब होगा,
जिससे भय भ्रान्ति मिटा करती वह ज्ञान न जाने कब होगा।
जिससे निज दोष दिखा करते, पापों अपराधों से डरते,
उस सद् विवेक का मानव में सम्मान न जाने कब होगा।
अच्छे दिन बीते जाते हैं, गुरुजन बहुविधी समझाते हैं,
भोगस्थल से योगस्थल में प्रस्थान न जाने कब होगा।
शीतलता जिससे आती है, सारी अशान्ति मिट जाती है,
वह नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा पर पान न जाने कब होगा।
सुख के साधन हैं सभी प्राप्त, इतने पर मन को शान्ति नहीं,
जिससे भगवान का अनुभव हो, वह ध्यान न जाने कब होगा।

(६६)

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये।
यह मन न जाने क्या-क्या दिखाये,
कुछ बन न पाया मेरे बनाये।
संसार में ही आसक्त रहकर,
दिन रात अपने मतलब की कहकर।
सुख के लिए लाखों कष्ट सह कर,
यह दिन अभी तक यूँ ही बिताये।
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ,
अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।

तुझको ही ध्याऊँ, तुझको ही पाऊँ,
संसार का कुछ भय रह न जाये।
वह योग्यता दो शुभ कर्म कर लूँ,
हृदय में अपने सद्‌भाव भर लूँ।
नर तन है साधन भव सिन्धु तर लूँ,
ऐसा समय फिर आये न आये।
हे नाथ हमें निरभिमानी बना दो,
दारिद्रय हर लो दानी बना दो।
आनन्दयमय विज्ञानी बना दो,
मैं हूँ पथिक यह आशा लगाये।

(६७)

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से,
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान यज्ञ से।
ऋषियों ने ऊँचा माना है स्थान यज्ञ का,
भगवान का है यज्ञ यह भगवान यज्ञ का।
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न ...
जो कुछ भी डालो अग्नि में खाते अग्नि देव।
इक-२ के बदले सौ-सौ को लाते हैं अग्नि देव,
बादल बना के पानी में बरसाते अग्नि देव।
पैदा अनाज करता है भगवान यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न ...
होता है कन्यादान देखो इसके सामने।
पूजा है इसको कृष्ण ने भगवान राम ने,
शक्ति व तेज यश भरा इस शुभ नाम में।
मिलता है राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न.....
इसका पुजारी कोई पराजित नहीं होता,
इसके पुजारी को कोई भी भय नहीं होता।
होती हैं सारी मुश्किल आसान यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न ....

चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है,
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुश नसीब है।
उपकारी मनुष्य बनता है इस देवयज्ञ से, जल्दी प्रसन्न ...

(६८)

मिलता है सच्चा सुख केवल,
भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल पल क्षण क्षण,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
बस काम में आठों याम रहे,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
चाहे संकट ने ही घेरा हो,
चाहे चारों ओर अन्धेरा हो।
पर चित्त न डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
ज्वाला में ही मुझे जलना हो,
चाहे काँटों पर ही चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
चाहे वैरी सब संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मृत्यु गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

(६९)

हे जगत स्वामी जगदीश पिता,
हो व्याप रहे तुम त्रिभुवन में।
हर पत्ते डाली डाली में,
सूखे में और हरियाली में।
वन उपवन कुञ्ज निकुञ्जन में,
हो व्याप रहे तुम त्रिभुवन में।
सरिता की तरल तरङ्गों में,
मानव की विमल उमङ्गों में।
हर जीव के अंगों अंगों में,
हो व्याप रहे तुम त्रिभुवन में।
धनवान में तू बलवान में तू,
अनजान में तू गुणवान में तू,
हर कण कण में भगवान है तू,
हो व्याप रहे तुम त्रिभुवन में।
जननी की सहज सरलता में,
शिशुओं की हृदय विमलता में।
पितु मात हृदय वत्सलता में,
हो व्याप रहे तुम त्रिभुवन में।

(७०)

ऐ दुनिया बता इससे बढ़कर,
फिर और सदाकत क्या होगी।
जो देदी तलाशे हक के लिए,
फिर और इबादत क्या होगी।
यूँ तो हर रात को तारीकी,
देती है पयाम उजाले का।

जिससे यह जहाँ पुरनूर हुआ,
उस रात की कीमत क्या होगी।
खञ्जर भी दिखाया अपनों ने,
और जहर पिलाया अपनों ने।
अपनों के यह इहसां क्या कम है,
गैरों से शिकायत क्या होगी।
औरों के लिए मरने वाले,
मर कर भी हमेशा जीते हैं।
जिस मौत पर दुनिया रश्क करे,
उस मौत की अजमत क्या होगी।
सदियों की खिजा के बाद खिला,
एक फूल उसे भी तोड़ लिया।
कलियों के मसलने वालों से,
फूलों की हिफाजत क्या होगी।

(७१)

चाँदी सोने के बदले में विद्वान खरीदे जाते हैं,
धनवान हुकूमत करते हैं गुणगान खरीदे जाते हैं।
है निराकार वह परमेश्वर पर जयपुर के बाजारों में,
मिट्टी पत्थर संगमरमर के, भगवान खरीदे जाते हैं।
कुछ कर्म धर्म का पता नहीं, निर्धन मजदूर किसानों को,
रोटी कपड़ों के नारों से, नादान खरीदे जाते हैं।
हरिद्वार के पंडोंको देखो,जाकर के देखो हरकी पौड़ी पर,
आपस में करें इशारे और यजमान खरीदे जाते हैं।
'नन्दलाल' गऊ बध होता है गौ मास के बदले बाहर से,
पौडर, सूर्खी और सिनेमा के सामान खरीदे जाते हैं।

(७२)

जिस नर में आत्म शक्ति है वह शीश झुकाना क्या जाने,
जिस दिल में ईश्वर भक्ति है वह पाप कमाना क्या जाने ।
मन मन्दिर में भगवान बसा जो उसको पूजा करता है,
मन्दिर के देवता पर जाकर वह फूल चढ़ाना क्या जाने ।
पितु मात की सेवा करता जो और दुखों को हरता जो,
वह मथुरा, काशी, हरिद्वार वृन्दावन जाना क्या जाने ।
दो काल प्रेम से जो प्राणी ईश्वर का चिन्तन करता है,
भगवान का है विश्वास जिसे, दुख में घबराना क्या जाने ।
जो खेला है तलवारों से और अग्नि के अङ्गारों से,
रणभूमि में जाकर पीछे वह पाँव हटाना क्या जाने ।
जो धर्मवीर और कर्मवीर वेदों का पढ़ने वाला है,
वह दुखिया निर्बल बच्चों को दुख देके सताना क्या जाने ।
जिसका ऊँचा आचार नहीं और धर्म से जिसको प्यार नहीं,
जिसका सच्चा व्यवहार नहीं'नन्दलाल'का गाना क्या जाने ।

(७३)

हे नाथ हमें मन मन्दिर में अपना दर्शन दिखला दीजे,
हे करुणा कर करुणा करके अपनी अनुभूति दिला दीजे ।
मोहक माया ने काया को है विषयागार बना डाला,
हे माया स्वामिन् माया का मोहक आवरण हटा दीजे ।
मेरी जिज्ञासा बड़ी प्रबल, हे नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ,
अपनी उपलब्धि के साधन का ज्ञान दयालु दिला दीजे ।
भौतिक भोगों को तुच्छ समझ मैं आत्म रति अभ्यस्त बनूं,
दिन रात नशा उतरे न मधुर मदिरा अध्यात्म पिला दीजे ।
मैं आत्म-समर्पण की इच्छा से आया पास प्रभु तेरे,
हृत्तन्त्री को प्रेरित करके सब कोमल तार हिला दीजे ।

ले भक्ति भाव के पुष्पों को मैं 'लाल' उपासक आया हूँ,
आदित्य! हमारे आत्म कमल दे दर्शन देव दिखा दीजे ।

(७४)

अशरण शरण कृपा के धाम, एक सहारा तेरा नाम ।
कैसी सुन्दर सृष्टि बनाई, चाँद सूर्य सी ज्योती जगाई,
बहुत विलक्षण वायु चलाई, एक से एक विलक्षण काम ।
सुन्दर सुरस सुरुचिकर पानी, अमृत अन्न खायें सब प्राणी,
गुण गायें ज्ञानी और ध्यानी, भज निरन्तर आठों याम ।
पत्ता पत्ता रङ्ग रूप निराला, पुष्प पुष्प में गन्ध विशाला,
फल-फल पृथक प्रेम रस प्याल, लीली तेरी ललित ललाम ।
आया 'अमर' सत्पथ के गामी, मैं हूँ सदा कुमारग गामी,
एक नाम के दोनों नामी, मैं गुण रहित आप गुणधाम ।

(७५)

जगत प्रभु करुणा के धाम, अविरल अविचल अधम अकाम,
घट घट वासी पूरण एक, रखिए निज भक्तन की टेक ।
तुम स्वामी हम सेवक दीन, तुम हो सागर हम हैं मीन,
भक्ति भाव भरपूर कहायें, निशि वासर तेरे गुण गायें ।
ज्ञान भानु का होय प्रकाश, 'केवल' तुम्हारी आस ।

(७६)

सुन लो माता विनय हमारी,
हम हैं तेरे बालक तू है माँ हमारी ।
भ्रान्ति निराशा दूर भगा दो,
जग मग आशा दीप जगा दो ।
हरो विपद बाधायें भारी,
सुन लो माता विनय हमारी ।
शुभ कर्मों में ध्यान लगावें,
दुर्गुण सब उर से विसरावें ।

बनें धर्म पालक व्रतधारी,
सुन लो माता विनय हमारी।
विद्या पढ़ें विवेक बढ़ावें,
जग में सम्पत्ति सुयश कमायें।
मातृभूमि के हों हितकारी,
सुन लो माता विनय हमारी।
भर दो भक्ति प्रकाश हृदय में,
दुख में सुख में हार विजय में।
हो विश्वास तुम्हारा भारी,
सुन लो माता विनय हमारी।

(७७)

भगवन पार करो मोरी नइया,
तुम ना करोगे कौन करेगा। भगवन पार ..
गहरी नदिया नाव पुरानी, डूबन की है नाथ निशानी।
मन मेरो थर-थर काँपत है, तुम हो पार लगैया। भगवन ....
क्रोध भरी लहरें हैं यम की, जो देतीं मृत्यु की धमकी।
हो अधीर धीरज खो बैठा, तुम हो धीर बंधैया। भगवन ....
तेरे सिवा कोई और न दीखे, जाऊँ कहाँ कोई ठौर न दीखे।
नाम की लाज रखो प्रभु अपने, तुम हो लाज रखैया। भगवन ..

(७८)

जगत में सबसे बुरा है कुसङ्ग।
फंस कुसंग के जाल परत है, धर्म कर्म में भंग। जगत में ....
दूध सुधा सम समुधर सुखकर पियत सबैस उमंग।
वही दूध ह्वै जात हलाहल, चाटत जबहि भुजंग। जगत में ....
पाप मिटत करि स्नान, पान उर उमगत तरंग।
खारी भयो सिन्धु में परि वो मृदु शीतल जल गंग। जगत में ....

काजर की कोठरी में कितनों चल सम्हार निज अंग।
पै 'प्रकाश' लगिहै पुनि लगिहै, तन काजर को रंग। जगत में ..

(७९)

तू है सच्चा पिता सारे संसार का ओ३म् प्यारा,
तू ही तू ही है रक्षक हमारा।

चाँद सूरज सितारे सजाए, पृथ्वी आकाश पर्वत वनाये।
अंत आया नहीं तेरा पाया नहीं पारवारा तू ही तू ही है....

पक्षीगण राग सुन्दर हैं गाते, जीव जन्तु सभी सर झुकाते।
सुख उसी को मिले राह तेरी चले, जोकि प्यारा। तू ही ..
पाप पाखण्ड हमसे छुड़ाओ, वेद मारग पै सबको चलाओ।
लगे भक्ति में मन करें सन्ध्या हवन जग ये सारा। तू ही ..

अपनी भक्ति में मन को लगाओ, दीन दुखियों के कष्ट मिटाओ,
दुखिया कंगालों का और धनवालों का तू सहारा। तू ही ...

(८०)

वेला अमृत गया आलसी सो रहा बन अभागा,
साथी सारे जगे मैं न जागा।

झोलियाँ भर रहे भाग्य वाले, लाखों पतितों ने जीवन संभाले,
रंक राजा बनें भक्ति रस में सने. कष्ट भागा। साथी सारे ...
कर्म उत्तम थे नर तन जो पाया आलसी वनके हीरा गंवाया,
उल्टी हो गई मती, अपनी कर ली क्षति है अभागा। साथी
धर्म वेदों का ना देखा पाला, बेला अमृत गया ना संभाला,
सौदा घाटे का कर, हाथ माथे पर रोने लागा। साथी ..
'देश' तूने न अब भी बिचारा,
हंस का रूप था गदला पानी पिया बन के कागा। साथी सारे ..

(८१)

मेरे दिल की सुन्दर नगरी में,
कोई तेरे सिवा आबाद न हो।
इक याद तुम्हारी याद रहे,
और दिल में किसी की याद न हो।
ये मेरी निगाहें तेरे ही,
दीदार को भगवन प्यासी हैं।
आ जाना देर लगाना नहीं,
कहीं खानये दिल बर्बाद न हो।
तेरी याद की मस्ती में खोकर,
सुध भूल के तुझ को पा जाऊँ।
तेरा नाम रहे लब पर हरदम,
बस और कोई फरियाद न हो।
हर गीत तेरा, तेरी भक्ति का,
दीवाना बना दे दुनिया को।
ना 'वीर' रहे कोई ऐसा दिल,
जिस दिल में तुम्हारी याद न हो।

(८२)

वह राह तुम्हारी मुश्किल है,
हम आते आते थक जाते।
वह गीत तुम्हारा मुश्किल है,
हम गाते गाते थक जाते।
है भीड़ जुटी मझधारों में,
उत्ताल तरंगित ज्वारों में।
तट दूर है सागर गहरा है,
हम नाव चलाते थक जाते।

नीची है बहुत कुटी अपनी,
निज दया करो हे दयानिधे।
ऊँचा हैं महल दयानिधि का,
हम चढ़ते चढ़ते थक जाते।
हो दूर न कुछ भी हमसे तुम,
सन्देश न फिर भी देते क्यों।
हम घर-घर के दरवाजे पर,
आवाज लगाते थक जाते।
दी कैसी पीड़ न जाने कुछ,
क्या दर्द दिया अनजाने क्यों।
हैं फूल बहुत पर काँटों को,
हम गले लगाते थक जाते।
मत हमें पुकारो छिप छिप कर,
मम ओर निहारो निर्मोही।
हम तट तट के तूफानों से,
आंचल को बचाते थक जाते।

(८३)

प्रणव प्रणव अब बोल, बोल मेरे योगी मना,
जग माया में मस्त रहा तू, तर्क वितर्क ग्रस्त रहा तू।
अब तो अमी रस घोल, घोल मेरे योगी मना,
अगम निगम का मनन न कीन्हा नरकृत रचना में मन लीना।
पात पात मत डोल, डोल मेरे योगी मना,
इस धन जन पर तू बौराया, अन्त समय कुछ हाथ न आया।
श्वास वृथा मत रोल, रोल मेरे योगी मना,
पुण्य पुञ्ज से पाया चोला, पारस मणि हीरा अनमोला।
नैन विवेकी के खोल, खोल मेरे योगी मना,

जगदीश्वर से कर अनुरागा, किन जग धन्धों में तू लागा।
भक्ति तुला भी तोल, तोल मेरे योगी मना,
जीवन चदरिया मत कर काली, प्रेम से भर ले मानस थाली।
दर्शन पाले अडोल, अडोल मेरे योगी मना,
रोम रोम में प्रभु है व्यापा, कर दे अर्पण तज दे आपा।
बन 'सुकुमार' विभोर, विभोर मेरे योगी मना,

(८४)

मैं देख हुआ हैरान प्रभु जी तेरी लीला ॥

रवि शशि तारागण सारे, सांझ सवेरे चमकन हारे।
सर्वत्र आकाश है नीला ॥ प्रभू जी तेरी लीला
फूल सुगन्धी दे रहे, सृष्टि को सुख दे रहे।
श्वेत हरा कोई पीला ॥ प्रभु जी
पत्ता पत्ता गा रहा तेरा पता बता रहा।
कहीं पर्वत कहीं टीला ॥ प्रभु जी ..
झरने झर झर बोलते, सोम सुधा रस घोलते।
कहीं नदियाँ कहीं झीला ॥ प्रभु जी
कहीं बादल घनघोर घटायें,कहीं बिजली चमक दिखाए।
कहीं सूखा कहीं गीला ॥ प्रभु जी
बच्चों कीं मुस्कान में देखा, लाचारों के सदन में देखा।
तेरा बहुत कबीला ॥ प्रभु जी
नास्तिक के अहंकार में देखा,आस्तिक के विश्वास में देखा।
तू है रंग रंगीला ॥ प्रभु जी। ..

(८५)

भगवान तुम्हारे मन्दिर मे हम तुम्हें रिझाने आये हैं,
वाणी में है माधुर्य नहीं पर विनय सुनाने आये हैं।

चरणामृत लेने को भगवन् कोई पात्र हमारे पास नहीं,
इन दो नयनों के प्याले में कुछ भीख माँगने आए हैं।
तुमसे लेकर क्या भेंट धरें भगवान तुम्हारे जरणों में,
तुम दाता हो हम भिक्षुक हैं सम्बन्ध जुड़ाने आए हैं।
सेवा में कोई वस्तु नहीं, प्रभु खाली हाथ चले आए हैं,
हम रो रो कर इन आँसुओं का इक हार चढ़ाने आए हैं।

(८६)

यह ओ३म् नाम ओ३म् नाम सबसे प्यारा है,
सब प्राणियों के जीवन का एक यही सहारा है।
अकार उकार मकार से बनता है प्यारा ओ३म्,
सत् चित् आनन्द स्वरूप यह कहकर पुकारा है।
पृथ्वी पहाड़ दरिया सूरज व चन्द्र तारे,
जो दृष्टिगोचर हो रहा उसका नजारा है।
कारीगरी विचित्र है महिमा महान् है,
हर वस्तु में व्यापक है हर वस्तु से न्यारा है।
उसको 'वीरेन्द्र' भूल सुख पाया न किसी ने,
सुख शान्ति मिलती जहाँ उसका भण्डारा है।

(८७)

जो करता रहेगा भजन धीरे धीरे,
तो मिल जाय भगवन उसे धीरे धीरे।
जगत में असम्भव कुछ भी नहीं,
जो करता रहेगा यतन धीरे धीरे।
अगर उससे मिलने की दिल में लगन हो,
करो शुद्ध अन्तःकरण धीरे धीरे।
प्रभु एक है एक है उसकी वाणी,
करो उस पे अपना चलन धीरे धीरे।

चलो सत्य पथ पर प्रभो को पहिचानो,
जो करलो उसी का मनन धीरे धीरे।

(८८)

जीवन की घड़ियाँ यूँ ही न खो,
ओ३म् जपो ओ३म् जपो।
ओ३म् ही सुख का सार है, जीवन है जीवन आधार है,
उसके सिवाय और न को, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।
मन की गति सम्भालिये, भक्ति की आदत डालिये,
धोना जो चाहे मन को तू धो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।
चोला मिला शुभ कर्म का, करने को सौदा धर्म का,
प्रेम की गङ्गा में सब ही बहो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।
मुख से ओ३म् उचारिये, हृदय में अर्थ विचारिये,
श्वासों की माला इसमें पिरो, ओ३म् जपो ओ३म् जपो।

(८९)

प्रभो जर्रे जर्रे में है तू समाया,
अजब तेरी लीला अजब तेरी माया।
न वन्धन में आता है तू मेरे स्वामिन्,
नहीं तुमको भगवान माता ने जाया।
हो नस और नाड़ी के बंधन से बाहर,
बिन हाथों संसार सारा बनाया।
है रक्षक तू ही अन्नदाता सभी का,
तेरा भोग मन्दिर में कैसे लगाया।
रहा ढूँढता काशी, मथुरा, अयोध्या,
भटकता रहा यूँ ही जीवन गंवाया।
न आँखों से आता नजर तू किसी को,
तुझे मन के मन्दिर में भक्तों ने पाया।

करो लाल पर ऐसी कृपा प्रभु जी,
सफल होवे मानव का चोला जो पाया।

(६०)

प्रभु पर रख अपना विश्वास, प्रभु पर रख अपना विश्वास।
जगत के स्वार्थी बन्दों की तू मूरख मत कर आस ॥ प्रभु पर ··
जिसने तुझको जन्म दिया है खाने को भी देगा,
गर्भ में जिसने रक्षा की है, अब क्यों न सुध लेगा।
सच्चा स्वामी वह है तेरा बन जा उसका दास ॥ प्रभु पर ...
कर्मों के अनुसार प्रभु ने लेख तेरे लिख दीने,
मिट सकता नहीं लेख विधाता क्या रोने धोने से।
चिन्ता में क्यों डूब के मूरख रहता सदा उदास ॥ प्रभु पर ..
सबर सबूरी से जो मिल जाए, रूखी सूखी खाके,
दुनिया के धन्धे करता जा प्रभू से प्रीति लगाके,
जगत के हर इक कण कण में है पारब्रह्म का वास ॥ प्रभु पर ..
देख कहीं ऐ मूरख बन्दे मन ना डुलने पावे,
हीरा जन्म अमोलक है मिट्टी में न रुलने पावे।
तेरा दाता दानी रहता हरदम तेरे पास ॥ प्रभु पर ··

(६१)

प्रभू हमें ज्ञान दो भक्ति का दान दो,
जीवन हमारा निर्विकार हो। हां प्रभू जी ··
सुख से आयु सारे गुजारें, एक है ईश्वर सभी पुकारें।
वेद हमारा धर्म है, सिखलाना शुभ कर्म है,
इसी से हमारा पूरा प्यार हो। हा प्रभु जी ·
वैर विरोध को दूर हटा दो, प्रेम की हरजाँ गंगा बहादो।
होवें सब धर्मात्मा, हो पवित्र आत्मा,
आर्य बनावें सब संसार को। हां प्रभु जी ··

ईश्वर तुम से महवर पावें, देश के सारे कष्ट मिटावें।
पूरण आशा कीजिए, शरण में अपनी लीजिए।
इसी से हमारा बेड़ा पार हो। हाँ प्रभु जो
पाखण्डियों के गढ़ सब तोड़ें, चोर लुटेरा एक न छोड़ें।
चिन्ता सबकी दूर हो, सबको यह मंजूर हो।
जड़ से उखाड़ें दुराचार को। हां प्रभू जी ...

(६२)

धीरे धीरे घटती जाये सारी रे उमरिया।
दुनियाँ के मेले में लुट गई जीवन की गठरिया॥
साथी नहीं किसी का कोई, झूठे सपने प्यार के।
माया के सब तोड़ के बंधन, होजा भव से पार रे॥
चलता चलता जा पहुँचेगा, प्रीतम की नगरिया॥ धीरे ...
झूठे गर्व में मदमाता है मिट्टी में मिल जायेगा,
हीरा जन्म अनमोल है तेरा, फिर पीछे पछताएगा।
पल पल जीवन बीता जाए, कल की क्या खबरिया॥ धीरे ...
ढूँढ रहा है जिसको प्यारे, भीतर है भगवान रे,
मुक्ति तेरे द्वार खड़ी है, क्या भूला नादान रे।
पग पग पगला ढूँढ रहा है, पाई ना डगरिया॥ धीरे ...

(६३)

मोहे कौन बचावेगा बिना तेरे दीनबन्धु॥
सुन्दर देह पर दाग लगाए, पग पग पगला ठोकर खाए।
अब कौन उठावेगा बिन तेरे दीनबन्धु॥
जोर का तूफान रैन अन्धेरी, भवसागर में नवका मोरी।
पार कौन लगावेगा बिना तेरे दीनबन्धु॥
छोड़ दे मनवा पाप के फन्दे, बीती बातें भूल जा वन्दे।
वरना तू पछतायेगा बिना तेरे दीनबन्धु॥

अव भी आजा सीधे पथ पर, मन काबू कर चढ़जा रथ पर।
जीवन वृथा ही जायेगा बिना तेरे दीनवन्धु ।।
अब भी आजा तू सत्संग निश्चय करले तू अपने मन में।
रो रो दु:ख उठायेगा, बिना तेरे दीनवन्धु ।।

(६४)

शरण प्रभू की आओ रे यही समय है प्यारे ।
आओ प्रभू गुण गाओ रे यही समय है प्यारे ।।
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानू ।
आओ दर्शन पाओ रे यही समय है प्यारे ।।
अमृत झरना झरता इस से ।
पी के अमर हो जाओ रे यही समय है प्यारे ।।
छल कपट और झूठ को त्यागो ।
सत्य में चित्त लगाओ रे यही समय है प्यारे ।।
प्रभु की भक्ति बिन नहीं मुक्ति ।
दृढ़ विश्वास जमाओ रे यही समय है प्यारे ।।
कर लो नाम प्रभू का सुमिरन ।
अन्त को ना पछताओ रे यही समय है प्यारे ।।
धन्य दया जो सब को पाले ।
मत उसको विसराओ रे यही समय है प्यारे ।।
छोटे वड़े सब मिलके खुशी से ।
गुण ईश्वर के गाओ रे यही समय है प्यारे ।।

(६५)

समय न गंवाओ रे गाओ गुण ओ३म् के,
साथ चलेगा ना सिवाय ओ३म् नाम के ।
कुटुम्ब जवानी माया काहे का गुमान रे,
आज है रहे ना कल झूठी तेरी शान रे।

झूठ के झमेले सारे एक भी न काम के। साथ चलेगा ...
सुमिरन प्रभू का करो, करो शुभ काम रे।
ओ३म् का जाप करो यही शुभ नाम रे।
रात दिन गीत गाओ करुणानिधान के। साथ चलेगा ....

ओ३म् ओ३म् ओ३म् सदा ओम ओम गावौ रे।
ओ३म् की कृपा से सारा जीवन बनाओ रे।
'ओंकार' कोई न तेरा सिवा भगवान के। साथ चलेगा ....

(६६)

प्रभू ने देखो कैसा रचा संसार ॥
भूमण्डल आकाश बनाया, सूरज का सुप्रकाश दिखाया।
चाँद और तारों को चमकाया, महिमा उसकी है यह सारी।
किया उचित विस्तार। प्रभु ने देखो

सुन्दर मानुष देह बनाई, सूरत में सब न्यारी न्यारी।
देखन में सब ही अति प्यारी, कीट पतंग पशु पक्षी आदि।
सब का रचने हार। प्रभु ने देखो

कहीं ओले कहीं बर्फ गिराये, शीत गर्म कहीं हवा चलाये।
कभी सर्दी कभी गर्मी आये, कभी वर्षा की झड़ी को देखो।
कैसे चले फव्वार। प्रभु ने देखो

कहीं पे सुन्दर वन उपजाये, कहीं वेल बूटे हैं लगाये।
बड़े बड़े दरिया हैं बहाये, पर्वत नदी समुद्र आदि।
एक से एक अपार। प्रभु ने देखो ..

वृक्ष और पौधों की हरियाली, भांति २ की फूलें डाली।
उनमें सुगन्ध से कोई नहीं खाली, कली खिले और फूल खिलावे।
करे जगत उपकार। प्रभू ने देखो
आओ सब मिल ध्यान लगावें, परमपिता से प्रीति बढ़ावें।

जिसे हरदम आनन्द पावें, हम सब ही उस जगदीश्वर का।
गुण गावें हर वार। प्रभू ने देखो कैसा रचा संसार

(६७)

मेरे हृदय रूप मन्दिर में बस आजा प्यारे ओ३म्।
मेरे मन मन्दिर में बस जा, मेरे रोम रोम में धंस जा।
मेरा दुई का पर्दा फटजा, बस आ जा प्यारे ओ३म्।
मेरे अवगुण हैं वहुतेरे, कैसे आऊँ प्रभू पास तेरे।
तुम बख्शो अवगुण मेरे, बस आजा प्यारे ओ३म्।
मेरा पापों से मन मैला, किस तरह होवे प्रभू मेला।
अब ज्ञान का दीप जलाजा, बस आजा प्यारे ओ३म्।
मोह माया की काटो झाड़ी, हाथ पकड़ाके ज्ञान कुल्हाड़ी।
मैं तुझ से आशीश पाऊँ, बस आजा प्यारे ओ३म्।

(६८)

ओ३म् नाम रस भीनी चदरिया झीनी रे झीनी।
अष्ट कमल का चर्खा चाले, पाँच तत्व की पूनी।
नव दस मास बुनत ही आगे, मूरख मैली कीनी। चदरिया ...

जब मेरा चादर बुन घर आई, रंगरेजन को दीनी।
ऐसा रंग रंगे रंगरेजा लालो लाल कर दीनी। चदरिया ...

चादर ओढ़ शंका मत राखो, दो दिन तुमको दीनी।
मूरख लोग भेद नहीं जानत, दिन दिन मैली कीनी। चदरिया .....

ध्रुव प्रह्लाद सुदामा पोढ़ी, शुकदेव ने निर्मल कीनी।
दास कबीर जतन, ने ओढ़ी ज्यूँ की त्यूँ धर दीनी। चदरिया ...

(९९)

झीनी झीनी वीनी चदरिया ।
काहे का ताना काहे की भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया ।
इंगला पिंगला ताना भरनी, शुश्मन तार से बीनी चदरिया ।
आठ कमल दस चरखा डोले, पंच तत्व गुण तीनी चदरिया ।
साईं को सियत मास दस लागे, ठोक पीट के बीनो चदरिया ।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ के मैली कीनी चदरिया ।
दास कबीर जतन से ओढ़ी ज्यों की त्यों घर दीनी चदरिया ।

(१००)

तू घट के पट खोल रे तोहे पिया मिलेंगे ।
घट घट में तेरा साईं बसता, कटुक वचन मत बोल रे । तोहे···
धन यौवन पर गर्व न कीजे, झूठा पंच रंग चोला रे । तोहे···
सुन्न महल में दिया बार ले, आसन से मत डोल रे । तोहे···
जोग जुगत से रंग महल में, पिया पायो अनमोल रे । तोहे ·
कहे कबीर आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे । तोहे ··

(१०१)

ओ३म् वोल मेरी रसना घड़ी घड़ी ।
सकल कामतज, ओ३म् नामभज, मुखमण्डल में पड़ी पड़ी । ओम ..
ओम नाम सर्वोपरि प्रभू का, कहे वेद की कड़ी कड़ी । ओम ··
पूरण ब्रह्मा करेंगे पूरण, सब आशायें बड़ी बड़ी । ओम ·
पल पल पर ले जाना चाहती, मौत सिरहाने खड़ी खड़ी । ओम ·

(१०२)

तेरा ओ३म् नाम बस जाये प्रभु जी मेरी नस नस में ।
तेरी भक्ति का रंग भर जाये प्रभु जी मेरी नस नस में ।
तू दाता मैं दीन भिखारी, तू स्वामी मैं तेरा पुजारी ॥
गूंज गूँजती जाये प्रभु जी मेरी नस नस में ॥

पाप मिटा मन निर्मल हो गया, ओम नाम का अमृत पी लिया।
प्रेम झलकता जाए प्रभू जी मेरी नस नस में।
मिट गया मेरे मन का अन्धेरा, मिल गया प्यारा प्रीतम मेरा।
ज्ञान की ज्योति जगा दे प्रभू जी मेरी नस नस में,
प्रभू जी मेरा घट घटवासी अजर अमर और है अविनाशी।
मेरी आत्मा में रंग चढ़ जाये, प्रभू जी मेरी नस नस में।

(१०३)

प्रभू का भजन क्यों छोड़ दिया।
क्रोध न छोड़ा, लोभ न छोड़ा।
सत्य वचन क्यों छोड़ दिया। तूने प्रभू का...

राग न छोड़ा द्वेष न छोड़ा।
ज्ञान धर्म क्यों छोड़ दिया। तूने प्रभू का...

झूठे जग में मन ललचा कर।
असल वतन क्यों छोड़ दिया। तूने प्रभू का...

जिस सुमिरन से अति सुख होवे।
वह सुमिरन क्यों छोड़ दिया। तूने प्रभू का...

कौड़ी को तो खूब सम्हाला।
लाल रतन क्यों छोड़ दिया। तूने प्रभू का...

सालिक इक भगवान भरोसे।
तन, मन, धन क्यों छोड़ दिया। तूने प्रभू का....

(१०४)

शरण पड़ा हूँ मैं तेरी दयामय,
जगत सुखों में फँसकर स्वामी, तुमसे लिया चित्त फेरी दयामय।

वहा जात हूँ भव सागर में, पकड़ लेव भूजा मेरी दयामय,
पाप ताप ने दग्ध किया मन, दुर्मति ने लिया घेरी दयामय।
पाप मलीन हृदय में मेरे, ज्योति प्रकाशे तेरो दयामय,
सत्यम् ज्ञान मधुर मुख अपना, करो प्रकाश इक वेरी दयामय।
बालक जान प्रभू जी मेरे, कृपा दृष्टि फेरी दयामय,
प्रेम तरङ्ग उठे मन अन्दर, नाथ विनय सुनो मेरी दयामय।

(१०५)

ओ३म् नाम प्रिय बोल रे तोहे शान्ति मिलेगी,
चहूँ दिश प्रभू की ज्योति निरख ले ज्ञान चक्षु को खोल रे।
धर्म कर्म को हाट लगाले, पूरा पूरा तोल रे, तोहे...
राग द्वेष छल स्वार्थ त्याग दे, प्रेम प्रीति रस घोल रे, तोहे...
विषयों में मत खो प्रकाश तू, मनुष्य बन अनमोल रे, तोहे...

(१०६)

प्रभू जी मेरे तुम ही एक आधार ।।
दुख विनाशक सुख के दाता, सबके पालन हार,
शरण गहूँ प्रभू जाऊँ कहाँ मैं, कोऊ न पूछन हार।
तेरा ही मन्त्र जपूँ निशिवासर, चरणन में सिर डार,
परम कृपा कर दुखिया मुझको, अब तो लीजे उबार।
कर स्वीकार चरण में मेरा, भक्ति भरा उपहार,
दया करो प्रभू दीन हूँ मैं तव द्वारे रहा हूँ पुकार।

(१०७)

करो प्रभु से प्रेम अमृत वरसेगा,
प्रेम प्रीति से भक्ति कर ले,
दया धर्म भवसागर तर ले,
हो जाये वेड़ा पार अमृत वरसेगा।

सत्य ज्ञान को पहनो चुनरिया,
छोड़ कपट चलो प्रेम नगरिया,
हो जाये तेरा उद्धार अमृत बरसेगा।
परोपकार की बान पकड़ ले,
इससे इन्द्रियों मन जकड़ ले,
कर दे देश सुधार अमृत बरसेगा

(१०८)

ओ३म् नाम प्यारा जपो दिन रात।
१-प्राणों से भी ओ३म् है प्यारा,
अंग संग दिन रात। ओ३म् नाम ··
२-दुख हरता सब सुख का दाता,
वह ही है पितु मात। ओ३म् नाम ··
३-ओ३म् जपोगे सुख शान्ति मिलेगी,
बिगड़ी बनेगी सारी बात। ओ३म् ··
४-मद मत्सर से ओ३म् बचावे,
वै‌ लगाए जो घात। ओ३म् ···
५-काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार,
करने न पावें उत्पात। ओ३म् ··
६-ओ३म् नाम से सदा विजय हो,
होने न पावे मात। ओ३म् नाम ··
७-ओ३म् सकल रोगों की औषधि,
जपो सायं प्रभात। ओ३म् नाम ·
८-ओ३म् नाम सर्वोपरि प्रभू का,
कहें वेद यहीं बात। ओ३म् नाम ··
९-मन मन्दिर में ओ३म् विराजे,
करो दर्शन दिन रात। ओ३म् नाम ··

(१०९)

अभी तो जगाया अभी फिर सो गया,
उठ परदेसी तेरा वक्त हो गया।
अरे परदेसियों की यही है निशानी, यही है निशानी।
आये और चले गए खतम कहानी, खतम कहानी।
कोई गया हँस के तो कोई रो गया, उठ परदेसी ··
अपना समान सारा ले ले सम्भाल के, ले ले सम्भाल के।
फन्दे में न आ जाना किसी वाचाल के, किसी वाचाल के।
ऐसा मत कहना मेरा माल खो गया, उठ परदेसी ·
आ चुका तू पहिले भी कई दफा यहाँ पर, कई दफा यहाँ पर।
देख आँखें खोल तेरी याद है कहाँ पर, याद है कहाँ पर।
बोझ अभिमान का तो बड़ा हो गया। उठ परदेसी ··
ऐसा मत कहना मुझे किसी ने कहा नहीं, किसी ने कहा नहीं।
कोई परदेशी यहाँ टिक के रहा नहीं, टिक के रहा नहीं।
'नेम' कहे देख तेरा साथी लुट गया। उठ परदेसी ··

(११०)

जो सदाचार की खान हो बस आर्य उसे ही कहते हैं,
मन कर्म वचन एक हों जिसके, सारे काम नेक हो जिसके,
शुद्ध ज्ञानमय लेख हों जिसके, नीति निपुण गुणवान हो, बस आर्य ··
धर्म के दस लक्षण को धारे, जीते काम इन्द्रियाँ मारे,
मन से वैर विरोध बिसारे, जग का मित्र महान हो। बस आर्य ···

पर नारी माता सम जाने, पर धन धूरि बराबर माने ।
आत्मवत् सबको पहिचाने, सम द्रष्टा विद्वान हो,
बस आर्य

पर सेवा में जन्म बितावे, परमार्थ में प्राण गँवावे ।
मान प्रतिष्ठा तनिक न चाहे, धरता प्रभू का ध्यान हो,
बस आर्य ··

जिसमें ये गुण दें दिखलाई, उसे आर्य तुम समझो भाई ।
चाहे मुस्लिम हो या ईसाई, पोराणिक बौद्ध या जैन हो,
बस आर्य ··

जो वेदों की शिक्षा माने, ऋषि को पथ परदर्शक जाने ।
'व्यास' वचन जो मन में ठाने, ऐसा पुरुष महान हो,
बस आर्य ·

(१११)

काशी में कोई बताते हैं,
काबे में कोई कहते हैं ।
मैं कहता हूँ भटको न कहीं,
भगवान हर जगह रहते हैं ।
जो भटके भटके फिरते हैं,
उनको न मिला न मिलेगा कभी ।
हर जगह उन्हें दर्शन होते जो,
गैल ज्ञान की गहते हैं ।
जो दुःख सागर से दूर रहें,
उनको सुख का सम्पर्क कहाँ ।
वह भाग्य हीन भगवान विना,
नित नूतन संकट सहते हैं ।
जो पामर, पोच, पतित,
पापी, प्रभू से पृथक पड़े ।

दुर्व्यसनो दुष्ट दुराचारी,
दुख दावानल में दहते हैं।
सद्धर्मी सभ्य सदाचारी,
सत्पुरुष 'अमर' पद पाते हैं।
भगवान भक्त सुजनों के लिए,
सुख स्रोत सदा ही वहते हैं।

(११२)

कर ईश्वर का ध्यान ओ भोले, कर ईश्वर का ध्यान॥
जिसने तेरा शरीर बनाया, सूरज का सुप्रकाश दिखाया,
विश्व का सुन्दर बाग सजाया, उसके गुण पहिचान। ओ ··
वह ही सच्चा मोक्ष का दाता,हर प्राणी का पिता और माता,
उस ही से जोड़ ले नाता, उस पर हो बलिदान। ओ
विषय विकार मिटा दे सारे, सत्य का दर्शन पाले प्यारे,
मन का कष्ट मिटाले प्यारे, उसका कर गुण गान। ओ ··

(११३)

तू सच्चा कर्तार नमस्कार नमस्कार,
भव से करदो पार नमस्कार नमस्कार।
सूरज और चाँद में है तेरा ही उजाला,
तूने पहिन रखी है सितारों की माला।
महिमा अपरम्पार नमस्कार नमस्कार,
निराकार निर्लेप हो जगत के कर्ता।
प्राणों के आधार हो संकट के हर्ता,
गुण गाये संसार नमस्कार नमस्कार।
सारा ही संसार प्रभू तेरा ही पुजारी,
इष्ट देव तू है सबका हम तेरे भिखारी।
आये तेरे द्वार नमस्कार नमस्कार,

कहे 'नन्दलाल' सब की आत्मा पवित्र हो।
देह हो निरोग और ऊँचा चरित्र हो,
विनती बारम्वार नमस्कार नमस्कार।

(११४)

जय जय पिता परम आनन्द दाता।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता।
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का सृष्टा तू धर्ता संहर्ता॥
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना।
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड सारा समाता॥
मैं लालित पालित हूँ पितृ स्नेह का।
ये प्राकृत सम्वन्ध है तुझसे दाता॥
करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को।
करूँ मैं विनय नित्य सायं व प्रातः॥
मिटाओ मेरे भय को आवागमन के।
फिरूँ ना जन्म पाता और विलविलाता॥
बिना तेरे है कौन दीनन का वन्धु।
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता॥
अभी रस पिलाओ कृपा करके मुझको।
रहूँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता॥

(११५)

वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्त्तव्य मार्ग पर डट जायें,
पर सेवा पर उपकार में हम यह जीवन सफल बना जायें।
हम दीन दुखी निर्बलों विकलों के सेवक बन सन्ताप हरें,
जो हैं अटके भूले भटके उनको तारें हम पर जायें।
छल दम्भ द्वेष, पाखण्ड झूठ अन्याय से निशदिन दूर रहें,
जीवन हो शुद्ध सरल अपना शुचि प्रेमसुधा रस वरसायें।

निज आन मान मर्यादा प्रभू ध्यान रहे अभिमान रहे,
जिस देश जाति में जन्म लिया बलिदान उसी पर हो जायें।

(११६)

ओ मेरे परदेसी पन्छी जिस दिन तू उड़ जायेगा,
तेरा प्यारा पिंजरा पीछे यहाँ जलाया जायेगा।
जिस पिंजरे को सदा सभी ने पाला पोसा प्यार से,
खूब खिलाया खूब पिलाया हर दम रखा सम्हाल के,
तेरे रहते रहते नीचे उसे सुलाया जायेगा। ओ मेरे ··

देखे बिना तरसती आँखे, रहना चाहती साथ में,
तेरे बिना न खाते खाना तू ही था हर बात में,
तेरे पूछे बिना ही सारा काम चलाया जायेगा। ओ मेरे ·
रोयेंगे थोड़े दिन तक ये, भूलेंगे फिर बाद में,
ज्यादा से ज्यादा कुछ इतना कर देंगे तेरी याद में,
हलवा पूरी खाकर तेरा श्राद्ध मनाया जायेगा। ओ मेरे ··

इस दुनिया में क्या कुछ करना, कभी नहीं तू सोचता,
मूरख वे दिन भी आयेंगे पड़ा रहेगा सोचता,
जन्म अमोलक है यह हीरा माटी में मिल जायेगा। ओ मेरे ··

(११७)

धर्म वैदिक पे तन मन निसार है रे।
वेद ही सत्य विद्या का भण्डार है,
वेद ही सर्व सुखों का आगार है,
वेद ही एक मुक्ति का द्वार है रे। धर्म वैदिक ··
है हकीकत बयां वेद के दरमियां,
है न किस्से कहानी का नामों निशाँ,
ब्रह्म विद्या का इसमें विचार है रे। धर्म वैदिक ··

जिसकी श्रद्धा धर्म वेद पर हो गई,
जिन्दगी उसकी सुख से बसर हो गई,
आर्यों का वही गम गुजार है रे। धर्म वैदिक ··

वेद ही एक दुनिया में इलहाम है,
आर्यों का यह दावा सरे आम है,
आजमा दिल में गर कुछ गुबार है रे। धर्म वैदिक ··

हुआ मन को 'प्रकाशार्य' ऐसा भ्रम,
साँप मेरी नजर में था वैदिक धर्म,
लेकिन अब वह हो फूलों का हार है रे। धर्म वैदिक ··

(११८)

माता पिता भाई बन्धु सखा वह हमारा है।
ओ३म् नाम प्यारा है जो ओ३म् नाम प्यारा है॥

निराकार है वह जर्रे जर्रे में समाया है,
महिमा अपार अन्त किसी ने न पाया है,
पत्ता पत्ता डालो डालो करें यह इशारा है। ओ३म् ··

पृथिवी पहाड़ नदी नाले क्या बनाये हैं,
रङ्गदार फूल बिना हाथों के बनाये हैं,
लेता है प्रकाश उससे सूर्य चन्द्र तारा है। ओ३म् ··

ऋषि मुनि योगी सारे उसे ही धियाते हैं,
गीत प्रभु भक्ति के झूम झूम गाते हैं,
तोता मैना कोयल ने भी उसे ही पुकारा हैं। ओ३म् ··

वेद के अनुसार अपना जीवन जो बनाते हैं,
आत्मा को शुद्ध कर मुक्ति धाम पाते हैं,
'नन्दलाल' उसकी जय जय करे विश्व सारा है। ओ३म् ··

'यज्ञोपवीत गीत'

रचयिता — श्री पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
(देव मुनि वानप्रस्थ) ज्वालापुर।

ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

तीन सूत्र यज्ञोपवीत के शुभ कर्त्तव्य बताते हैं,
तुम कर्त्तव्य करो नित पावन जिनको तुम्हें बताते हैं।
पवित्रता को धारण करलो देह तथा मन वाणी की,
पवित्रता ही परम धर्म है यह ये सूत्र बताते हैं।
ज्ञान कर्म परमेश भक्ति ये, तीन मुक्ति के साधन हैं,
इनको प्राप्त करो उत्साही बनकर ये सिखलाते हैं।
तुम शरीर की मन आतमा की शक्ति वृद्धि का यत्न करो,
सम विकास को उत्तम गुरुजन उन्नति तत्व बताते हैं।
ऋण ईश्वर का माता पिता का ऋषि गण ये तीनों हैं,
तीन तार ये ब्रह्म सूत्र के, इनका स्मरण कराते हैं।
चिह्न नहीं ये उच्च जाति के किन्तु चिह्न कर्त्तव्यों के,
जो जाने उसकी उन्नति के ये साधक बन जाते हैं।
ज्ञान कर्म ईश्वर उपासना, ये वेदों के मुख्य विषय,
इससे वेदों के पढ़ने को, सूचित यही कराते हैं।

'गायत्री गीत'

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

सर्व रक्षक ईश का हम ध्यान करते सर्वदा,
प्राण रूप वही जगत का दुख नाशक है सदा।

सब जगह में व्याप्त है, सर्वज्ञ वह भगवान है,
पूर्ण जो आनन्दमय है दिव्य जिसकी शान है।
विश्व का कर्ता सनातन शान्ति सुखदाता वही,
शोक पातक की विनाशक जिसको है महिमा कही।
श्रेष्ठ उसके तेज का चिन्तन करें दिन रात हम,
बुद्धियों को हम सबों की शुद्ध करदे वह परम।
प्रेरणा उसकी मिले तब सर्व कर्म विशुद्ध हों,
दिव्य जीवन मुक्त होकर हम सदा उद्बुद्ध हों।

रचयिता—पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड (देव मुनि वानप्रस्थ)
ज्वालापुर।
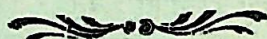
मुद्रक—प्रगति प्रिंटिंग प्रैस, 26 जिला परिषद मार्केट, ज्वालापुर

ईश-प्रार्थना

[लेखक—श्री गणेशदत्त वानप्रस्थी]

ओं भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा हम सब की भगवन् पूरी होय ।।
विद्या, बुद्धि, तेज, बल, सब के भीतर होय ।
दूध, पूत, धन धान्य से, वंचित रहे न कोय ।।
आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर ।
रागद्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर ।।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश ।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मन ईश ।
हमें बचाओ पाप से, करके दया दयाल ।
अपना भक्त बनाय कर, सब को करो निहाल ।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार ।
धैर्य हृदय में वीरता, सब को दो करतार ।।
नारायण तुम आप हो, पाप के मोचन हार ।
क्षमा करो अपराध सब, कर दो भव से पार ।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये, कृपा निधान ।
साधू संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान ।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

यज्ञ महिमा

[लेखक–श्री गणेशदत्त वानप्रस्थी]

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से ।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से ॥

ऋषियों ने ऊँचा माना है स्थान यज्ञ का,
भगवान का यज्ञ है भगवान यज्ञ का,
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से,
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से ।
होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से ॥

होता है कन्यादान भी इसी के सामने,
पूजा है इसको कृष्ण ने भगवान राम ने,
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से,
पैदा अनाज करता है भगवान यज्ञ से ।
होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से ॥

चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है,
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुश-नसीब है,
परोपकारी मनुष्य बनता है महान् यज्ञ से,
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से ।
होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से ॥

प्रगति प्रिंटिंग प्रेस, जिला परिषद मार्केट, ज्वालापुर (हरिद्वार)